डा.एन.एम.नायर

निदेशक (फरवरी, 1983 से अप्रैल, 1989 तक)

(आलू अनुसंधान के पदोन्नत, आधुनिकीकरण, बीज स्वास्थ्य, वैज्ञानिक क्षमता एवं सामरिक योजना के सुधार के कार्य किये)

जन्म एवं शिक्षा

डा. नारायनन माधवन नायर का जन्म 6 मई, 1933 को ग्राम- ठाकाजी (केरल) में हुआ था। सन् 1935 में उन्होंने बी.एस.सी. आनर्स (कृषि) दिल्ली विश्वविद्यालय से की थी। सन् 1958 में वह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में एसोसिएट बनाये गये थे तथा फिर लूइसियाना राजकीय विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका से सन् 1962 में उन्होंने पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। गौटिंगेन, डब्ल्यू जर्मनी के विश्वविद्यालय में सन् 1970 से 72 तक प्राध्यापकीय फैलो रहे जहां आपने पादप प्रजनन एवं वनस्पति विज्ञान में विशेषज्ञता हासिल की। ए.वी. हमबोल्ट फाउन्डेशन, पश्चिमी जर्मनी द्वारा आपको पोस्ट डोक्टरल फैलोशिप से सम्मानित किया गया।

व्यावसायिक कैरीयर

डा. एन.एम. नायर ने सन् 1953-54 के दौरान सामुदायिक परियोजना, चालकुडी में प्रसार अधिकारी, के रूप में, सन् 1958-59 के दौरान धान अनुसंधान केन्द्र, मोनकोम्पू में सहायक वनस्पतिशास्त्री के रूप में तथा सन् 1963 में कृषि अनुसंधान केन्द्र, कोझा में अधीक्षक के रूप में कार्य किया। सन् 1963 में आपने केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला में कोशिका जनन विज्ञानी (साइटोजेनेटिक्स) के रूप में पदभार ग्रहण किया तथा सन् 1970 तक आप यहां पर कार्यरत रहे। पश्चिमी जर्मनी से लौटने के पश्चात् सन् 1972-82 के दौरान आपने केन्द्रीय बागवानी फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ में संयुक्त निदेशक एवं कार्यवाहक निदेशक के रूप में कार्य किया। सन् 1982-83 के दौरान आप केन्द्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम में भी कार्यवाहक निदेशक रहे। फरवरी, 1983 में, आपने केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला में निदेशक का पदभार ग्रहण किया तथा वहां पर कार्यकाल पूरा होने के पश्चात् आप सक्रिय अनुसंधान करने के लिए वह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में प्रधान वैज्ञानिक के पद पर वापिस चले गये। अपनी सेवानिवृत्ति से पूर्व मई, 1993 में आपने केन्द्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान,

त्रिवेन्द्रम में निदेशक के पद पर कार्य किया। अब आप भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में एमेरिटस वैज्ञानिक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

सम्मान

डा. नायर बहुत से वैज्ञानिक निकायों, व्यावसायिक संस्थाओं, विशेषज्ञ समितियों, वैज्ञानिक पैनलों आदि से जुड़े रहे हैं। आप सन् 1977-82 तक केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सी.एफ.टी.आर.आई.) मैसूर, सन् 1977-82 तक भारतीय पोटाश अनुसंधान संस्थान, सन् 1979-82 तक चाय बोर्ड, सन् 1979-82 तक आर.आर.एल. त्रिवेन्द्रम, सन् 1979-82 तक डी.एम.ई.आर.ए.डी.ओ., कोचीन, की अनुसंधान सलाहकार समिति के सदस्य तथा सन् 1979-80 तक केरल राज्य की छठी योजना के प्रचार-प्रसार की संचालन समिति एवं टास्क फोर्स, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा तथा फसल उत्पादन, केरल सरकार, के सदस्य, सन् 1978 में साइलेंट वैली के संरक्षण हेतु सुरक्षा उपायों के लिए तैयार वैज्ञानिक समिति के सदस्य, सन् 1978-79 में इंडोनेशिया में काली मिर्च समुदाय के तकनीकी-आर्थिक अध्ययन पर तैयार स्थायी पैनल के सदस्य, तथा सन् 1978 में नारियल आनुवंशिक संसाधन तथा अन्तर्राष्ट्रीय पादप प्रजनन संसाधन बोर्ड (आई.बी.पी.जी.आर.) रोम इत्यादि के सलाहकार रहे के रूप में कार्य कर चुके हैं।

सन् 1977 में आप भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण द्वारा बेन्थम और भारत की हूकर वनस्पति में संसोधन करने के लिए जीनस ऊर्जा के वितरण एवं वर्गीकरण पर लिखने के लिए आमन्त्रित किया गया। सन् 1973 में आपको लेख तैयार करने एवं प्रजनन (चावल की उत्पत्ति एवं कोशिका जनन प्रकरण) की अग्रिम समीक्षा करने के लिए, सन् 1976 में फसल के पौधों (तिल) का विकास करने तथा सन् 1979 में क्रिस्ट, न्यूजीलैंड में फूल पौधों के पुर्ननिर्माण पर आयोजित प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पेपर प्रस्तुत करने के लिए भी आमन्त्रित किया गया था।

सन् 1973-80 तक आप जर्नल आफ प्लांटेशन क्रोप्स के प्रथम संपादक रहे। आपने दो पुस्तकें संपादित की तथा आपके 75 से अधिक शोध प्रकाशन अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हुए।